डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 13 मूल्य: 5 रुपए पृष्ठ : 4 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर, मंगलवार, 21 सितम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

राजस्थान में होगा बाल विवाह का रजिस्ट्रेशन

बाल विवाह के 30 दिन में देनी होगी सूचना, विधानसभा में पारित हुआ बिल, मंत्री ने कहा-बाल विवाह रजिस्टर्ड तो होंगे, लेकिन वैध नहीं माने जाएंगे

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में शादियों के रजिस्ट्रेशन से जुड़े कानून के तहत अब बाल विवाह का भी रजिस्ट्रेशन होगा। ब्लॉक स्तर तक विवाह रजिस्ट्रेशन अधिकारी रजिस्ट्रेशन करेंगे। विधानसभा में शुक्रवार को बहस के बाद राजस्थान विवाहों का अनिवार्य रजिस्ट्रेशन संशोधन बिल पारित किया गया।

बिल में यह प्रावधान है कि अगर शादी के वक्त लड़की की उम्र 18 साल से कम और लड़के की उम्र 21 से कम है तो उसके माता-पिता को 30 दिन के भीतर इसकी सूचना रजिस्ट्रेशन अधिकारी को देनी होगी। बाल विवाह के मामले में लड़का-लड़की के माता-पिता रजिस्ट्रेशन अधिकारी को तय फॉर्मेट में ज्ञापन देकर सूचना देंगे। इसके आधार वर रजिस्ट्रेशन अधिकारी उस बाल विवाह को रजिस्टर्ड करेगा। विवाहों के अनिवार्य रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा 8 में इसका प्रावधान किया गया है। पहले जिला स्तर पर विवाह रजिस्ट्रेशन अधिकारी होते थे। इस बिल में ब्लॉक स्तर तक का प्रावधान किया है। जब बाल विवाह अवैध ही रहेगा तो रजिस्ट्रेशन की जरूरत और विधेयक के उद्देश्य के मसले पर सवाल उठाते हुए भाजपा विधायकों ने सदन से वॉकआउट किया, लेकिन सरकार का तर्क है कि यह विधेयक सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आधार पर लाया गया है।

बाल विवाह के रजिस्ट्रेशन का मतलब वैधता देना नहीं: बाल विवाह के रजिस्ट्रेशन पर विपक्ष ने जमकर सवाल उठाए और इस बिल को वापस लेने की मांग की। बिल पर बहस का जवाब देते हुए संसदीय कार्य मंत्री शांति धारीवाल ने कहा कि बाल विवाह के रजिस्ट्रेशन का मतलब उन्हें वैधता देना नहीं है। बाल विवाह करने वालों के खिलाफ उसका रजिस्ट्रेशन करने के बाद भी कार्रवाई होगी। रजिस्ट्रेशन का मतलब उन्हें वैधता देना नहीं है।

धारीवाल ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने 2006 में सीमा बनाम अश्विनी कुमार के मामले में फैसला देते हुए निर्देश दिए थे कि सभी तरह के विवाहों का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। हर शादी का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा।

रजिस्ट्रेशन का मतलब शादी को वैधता देना नहीं है। धारीवाल ने कहा कि किसी नाबालिग की शादी हुई है तो बालिग होते ही उसे रद्द करने का अधिकार होगा।

कोरोना जांच बढ़ाने के लिए कोबास मशीन क्रय की गई : डॉ. रघु शर्मा

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने बुधवार को विधानसभा में बताया कि राज्य में कोविड-19 से प्रभावितों की समय पर जांच सुनिश्चित की जा सके इस लिये कोबास मशीन की खरीद की गई। डॉ. शर्मा प्रश्नकाल में विधायकों द्वारा इस संबंध में पूछे गये पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह मशीन एक ही कम्पनी बनाती है और प्रदेश में आरटीपीसीआर टेस्ट की सीमा ब?ाने के लिए ही इस मशीन की खरीद की गई। उन्होंने कहा कि पहले जो मशीनें उपलब्ध थीं उनमें एक चक्र में केवल 96 जांच ही कर सकते थे और रिपोर्ट आने में भी 5-7 घंटे लगते थे।

उन्होंने बताया कि कोविड के प्रभाव को देखते हुए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने चिकित्सकों का एक दल बनाया। इसके बाद इस दल ने ही इस मशीन को खरीदने की बात कही, ताकि अधिक जांचे कम समय में की जा सकें। उन्होंने बताया कि इस मशीन की टेस्ट सीमा एक दिन में 4 हजार तक है और जब प्रदेश में टेस्टिंग पर दबाव बढ़ रहा था तब मशीन द्वारा एक दिन में 3 हजार 500 टेस्ट भी किये गये।

नए मेडिकल कॉलेजों में आगामी सत्र से शिक्षण कार्य शुरू हो : चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा

शेष मेडिकल कॉलेजों का निर्माण कार्य 15 माह में पूर्ण करने के निर्देश

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। चिकित्सा शिक्षा मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि प्रदेश के स्वीकृत 16 नवीन मेडिकल कॉलेजों में से जिन 4 मेडिकल कॉलेजों (श्रीगंगानगर, चित्तौ?ग?, सिरोही और धौलपुर) में निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया है, उनमें यह सुनिश्चित किया जाए कि आगामी सत्र से वहां शिक्षण कार्य प्रारंभ हो सके।

डॉ. शर्मा ने स्वीकृत 16 मेडिकल कॉलेजों में से शेष 12 मेडिकल कॉलेजों के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने शेष मेडिकल कॉलेजों के निर्माण कार्य को भी आगामी 15 माह में पूर्ण करने के निर्देश दिए।

चिकित्सा शिक्षा मंत्री डॉ. रघु शर्मा की अध्यक्षता में गुरुवार को राजस्थान मेडिकल एजूकेशन सोसायटी की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित सभी मेडिकल कॉलेजों के निर्माण के संबंध में अब तक हुई कार्यवाही की विस्तार से समीक्षा की गई।

गुणवत्ता के साथ निर्धारित समयावधि में करें पूर्ण कार्य : डॉ शर्मा ने प्रदेश में सभी निर्माणाधीन और प्रस्तावित कॉलेजों के निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समयावधि में पूर्ण करना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में गुणवत्ता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। गुणवत्ता की जांच कराने के उपरांत ही संबंधित कंपनियों को भुगतान की कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने निर्माण करने वाली एजेंसियों से निर्माण कार्यों के मासिक लक्ष्य निर्धारित कर उनकी प्रगति की निरंतर समीक्षा करने के भी निर्देश दिए।

देश के अन्य राज्यों में टीम भेजने के निर्देश: डॉ. शर्मा ने नवीन मेडिकल कॉलेजों में आधुनिक तकनीक और जानकारियों के समावेशन के लिए देश के अन्य राज्यों में बने उत्कृष्ट मेडिकल कॉलेजों के भवनों का एक टीम बनाकर निरीक्षण करने के भी निर्देश दिए, ताकि उनमें हुए अच्छे एवं गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्यों के अनुरूप राजस्थान में भी भविष्य में बनने जा रहे मेडिकल कॉलेजों हेतु काम किया जा सके। उन्होंने संबंधित कंपनियों को सभी मेडिकल कॉलेजों के भवनों में एकरुपता रखने के भी निर्देश दिए।

बैठक के दौरान चिकित्सा शिक्षा सचिव वैभव गलारिया, आयुक्त चिकित्सा शिक्षा शिवांगी स्वर्णकार व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे, जबकि संबंधित मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य व अन्य अधिकारीगण वर्चुअली जु? रहे।

3 मेडिकल कॉलेजों का निर्माण कार्य 2 व 3 का 10 अक्टूबर से: चिकित्सा शिक्षा मंत्री ने दौसा, हनुमानगढ़ और बांसवाड़ा जिलों में मेडिकल कॉलेज के निर्माण का कार्य आगामी 2 अक्टूबर से एवं नागौर, टोंक और करौली जिले में आगामी 10 अक्टूबर से निर्माण कार्य प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्माण कार्य में गति लाने के लिए संबंधित कंपनियों को 2 अथवा 3 शिफ्ट में कार्य करवाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने जैसलमेर, सवाईमाधोपुर, अलवर और बारां में निर्माण संबंधी कार्यों में गति लाने तथा बूंदी व झुंझुनूं जिलों के मेडिकल कॉलेजों से जुड़े कार्यों को भी जल्द से जल्द प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रथम चरण में पूर्व में निर्मित व संचालित भरतपुर, भीलवाड़ा, बाड़मेर और सीकर जिलों के मेडिकल कॉलेजों के छात्रों की ब?ी हुई संख्या के अनुरूप विस्तार के लिए किए जाने वाले के निर्माण कार्यों को भी निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए।

सड़क परिवहन मंत्री की दिल्ली-जयपुर इलेक्ट्रिक हाईवे की घोषणा: गडकरी बोले...

दिल्ली से किशनगढ तक हाईवे पर 1200 करोड़ रुपए की लागत से बनेंगे फ्लाईआवेर, देश भर में दो साल में स्कूटर-मोटरसाइकिल इथेनॉल से चलेंगे

गडकरी ने कहा... जयपुर-दिल्ली हाईवे की खराबी के लिए मैं जिम्मेदार नहीं

कार्यालय संवाददाता

जयपुर/दौसा। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि मेरा सपना है दिल्ली-जयपुर इलेक्ट्रिक हाईवे बनाया जाए। इस इलेक्ट्रिक हाईवे पर बस, ट्रक सहित सभी इलैक्ट्रिक वाहन ही चले। इलेक्ट्रिक हाईवे का आगे मूर्त रूप दिया जाएगा, यह मेरा सपना है। गडकरी दौसा में मुंबई- दिल्ली ग्रीनफील्ड हाईवे के निरीक्षण के बाद मीडिया से बातचीत कर रहे थे। गडकरी ने कहा- दिल्ली से किशनगढ तक हाईवे सुधार के लिए नया डीपीआर बनवाया है। 1200 करोड़ की लागत से फ्लाईआवेर बनाने सहित सुधार के काम होंगे। डेढ साल में 100 प्रतिशत परफेक्ट हो जाएगा। दिल्ली जयुपर हाईवे पर कई जगह अतिक्रमण है। इसे जल्द ठीक कर दिया जाएगा। गडकरी ने कहा- आगे हम डीजल-पेट्रोल की जगह देश में इथेनॉल से वाहन चलाना चाहते हैं। इसके लिए हम कानून में बदलाव करने जा रहे हैं। पहले फेज में दो साल में स्कूटर और मोटरसाइकिल इथेनॉल से चलाने की व्यवस्था होगी। इथेनॉल 65 रुपए लीटर में मिलेगा जबकि पेट्रोल इससे बहुत महंगा पड़ता है। हम पेट्रोल डीजल की जगह आगे पूरी तरह से इथेनॉल आधारित वाहन चलाना चाहते हैं।

म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट्स की धुन बजाएंगे वाहनों के हॉर्न: गडकरी ने कहा- वाहनों के हॉर्न में अब भारतीय म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट्स की धुन सुनाई देगी। वाहनों के हॉर्न में अब सारंगी, तबला, हार्मोनियम सहित भारतीय म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट की धुनें लगाई जाएंगी। इससे साउंड पॉल्युशन कम होगा। वन्यजीवों के आसपास होकर गुजरने वाले हाईवेज से वन्यजीव परेशान नहीं होंगे।

दिल्ली-जयपुर हाईवे की कमी के लिए मैं पूरी तरह जिम्मेदार नहीं: दिल्ली जयपुर हाईवे पर कई जगह खामियों के सवाल पवर गडकरी ने कहा कि दिल्ली-जयपुर हाईवे के चार ठेकेदार भाग गए। दो का दिवाला पिट गया। इस हाईवे को लेकर वसुंधरा राजे से 25 बार मीटिंग करवाई। 12 बैंकों के 1300 करोड़ के लेन को लेकर विवाद हुए। अब हम किशनगढ तक फ्लाईओवर सहित सुधार के काम डेढ़ साल में पूरे हो जाएंगे। दिल्ली-जयपुर हाईवे की तकलीफ के लिए पूरी तरह मैं जिम्मेदार नहीं। मेरे आने के पहले इसका टेंडर हो चुका था। फिर भी इस पर काम हुआ है और आगे इसे ठीक किया जाएगा।

दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे के किनारे राजस्थान सरकार करे जमीन अवाप्त, हाईवे के आसपास जमीन नहीं बेचें किसान: गडकरी ने कहा- ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस वे के आसपास राजस्थान सरकार जमीन एक्वायर करे, आप देरी करोगे तो नेता, बिल्डर लोग पहले जमीन ले लेते हैं। बेचारे गरीब किसान जमीन बेच देते हैं। मैं किसानों से कहना चाहता हूं, जमीन पर करोड़ों का भाव आए तो भी बेचना मत, इसे रोककर रखिए। किसी डवलपर के साथ जॉइंट वेंचर करके जमीन को डवलप करके करोड़ों कमा सकते हैं। आजकल लोग हमारे पास हाईवे के लिए जमीन अवाप्त करने के लिए ज्ञापन लेकर आते हैं क्योंकि हम बाजार भाव से ज्यादा पैसा देते हैं।पहले जमीन अवाप्त नहीं करने के ज्ञापन लेकेर आते थे अब ऐसा नहीं है।

गहलोत के ठीक होने तक कैबिनेट विस्तार पर ब्रेक

अजय माकन बोले- तबीयत खराब न होती तो अब तक कैबिनेट विस्तार हो जाता, पायलट का क्या करना है यह मेरे लेवल की बात नहीं; कांग्रेस अध्यक्ष तय करेंगे

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी अजय माकन ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की तबीयत खराब नहीं होती, तो विधानसभा सत्र से पहले ही कैबिनेट विस्तार, राजनीतिक नियुक्तियां हो गई होतीं। अब कुछ समय के लिए सब पर ब्रेक लग गया है। सीएम की तबीयत ठीक होने के बाद ही अब काम आगे बढ़ेगा। सचिन पायलट जी का क्या करना है? एआईसीसी लेवल पर क्या होगा? यह मेरे लेवल की बात नहीं है। यह कांग्रेस अध्यक्ष को तय करना है।

माकन ने कहा- गहलोतजी की तबीयत ठीक रहती तो अब तक कैबिनेट विस्तार हो जाता। पिछली बार मिला था, तब भी मैंने कहा था। दुर्भाग्यवश तबीयत खराब होने की वजह से यह नहीं हो सका। विधानसभा सत्र चल रहा है, लेकिन अभी भी अशोकजी घर से ही फाइलें निकाल रहे हैं। ऐसे समय में इन सब चीजों पर कुछ समय के लिए ब्रेक लगा हुआ है। पूरा रोडमैप तैयार है। क्या चीज पहले करनी है, क्या बाद में करनी है, सब रेडी है। बस गहलोतजी के जल्दी से ठीक होने का इंतजार है।

कैबिनेट विस्तार के बाद जिलाध्यक्ष घोषित होंगे: जिलाध्यक्षों की नियुक्ति के सवाल पर अजय माकन ने कहा- कैबिनेट विस्तार के बाद जिलाध्यक्ष घोषित होंगे। पहले से ही हम लोगों का लाइन ऑफ एक्शन है कि कौन सी चीज कब करनी है। हमारे बोर्ड, कॉर्पोरेशन में भी नियुक्तियां होनी हैं। जिलाध्यक्ष भी हैं। हमने जनवरी में 38 लोगों की छोटी पीसीसी बनाई, जो अच्छे से काम कर रही है। बाकी नियुक्तियां भी एक-एक करके होंगी।

हमने सबसे रिपोर्ट ली है: जयपुर जिला प्रमुख चुनाव में क्रॉस वोटिंग और पायलट समर्थक वेद प्रकाश सोलंकी के आरोपों पर माकन ने कहा- वेदप्रकाश ने आरोप लगाए हैं। उन पर भी आरोप लगे हैं। हमने सबकी रिपोर्ट ली है। उसे हम देख रहे हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा।

सीके बिरला हॉस्पिटल के सीनियर पेन एक्सपर्ट डॉ. संजीव शर्मा ने बताया

सामान्य कार्यों के लिए भी मरीज को असमर्थ कर सकता है सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द

पूरे सर में झुनझुनी के साथ होता है तेज दर्द

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। सिरदर्द इतनी आम समस्या है कि बहुत सारे लोगों ने इसे %बीमारी% समझना ही बंद कर दिया है। आमतौर पर लोग सिरदर्द के कारणों को नहीं समझना चाहते हैं। देखा जाता है कि सिरदर्द की समस्या होने पर कोई तेल, बाम लगाकर या दर्द निवारक दवा का सेवन करके इससे छुटकारा पा लिया जाता है। कुछ सिरदर्द, जिनका कारण तनाव या चिंता होते हैं, वो अपने आप ठीक हो जाते हैं। मगर सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द, जिसे ऑक्सीपिटल न्यूराल्जिया के नाम से भी जाना जाता है, इसे लंबे समय तक नजरअंदाज करना मरीज के लिए खतरनाक हो सकता है।

क्या होता है सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द

सीके बिरला हॉस्पिटल के सीनियर पेन एक्सपर्ट डॉ. संजीव शर्मा ने बताया कि सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द एक अलग तरह का सिरदर्द है। यह सिरदर्द के साथ-साथ आपको गर्दन के पिछले हिस्से में भी दर्द महसूस होता है। इसका खतरा उन लोगों होता है, जो लोग आमतौर पर सही पोश्चर नहीं रखते हैं। गर्दन के पिछले हिस्से और खोपड़ी की लाइनिंग के बीच में एक प्वाइंट आता है, जिसे सर्वाइकल स्पाइन कहते हैं। इसी जगह पर होने वाला दर्द सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द है। इसके कारण सिर के पीछे और ऊपरी गर्दन में या पूरी खोपड़ी और माथे पर झुनझुनी, धड़कन या दर्द हो सकता है।

नर्व ब्लॉक कर पाई जा सकती है दर्द से राहत

सर्वाइकोजेनिक सिरदर्द के कारण मरीज को होने वाले तेज दर्द के कारण उसके सामान्य काम-काज करने की क्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है। इसके इलाज के लिए सबसे पहले मरीज को गलत पोश्चर में बैठने की आदत दूर करनी होती है और सॉफ्ट सर्वाइकल कॉलर का इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है और कुछ दवाएं दी जाती हैं। डॉ. संजीव ने बताया कि अगर इससे दर्द में राहत नहीं मिलती तो मरीज के प्रभावित हिस्से मे मस्कुलो स्केलटल अल्ट्रासाउंड से प्रभावित नर्व का पता लगाया जाता है और रेडियोफ्रिक्वेंसी एब्लेशन द्वारा ऑक्सीपिटल नर्व को ब्लॉक किया जाता है या बोटोक्स इंजेक्शन देकर मांसपेशियों को राहत दिलाई जाती है।

लक्षण

सर के पिछले हिस्से में दुखन, खिंचाव, या चुभता हुआ दर्द होना जो पूरे सर में फैल जाए, गर्दन की मांसपेशियों में जकड़न व दर्द महसूस होना] कंधे व छाती की मांसपेशियों में तनाव

प्रो.शर्मा बने महात्मा गांधी संस्थान के निदेशक

जयपुर। राजस्थान लोक सेवा के पूर्व अध्यक्ष प्रो.बी.एम.शर्मा को मुख्य मंत्री अशोक गहलोत ने अपनी सरकार की महत्वाकांक्षी गांधीवादी शैक्षणिक योजना के तहत संस्थापना हेतु प्रस्तावित महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट आफ गवर्नेंस एंड सोशल साइन्सेस का निदेशक नियुक्त किया है। प्रो.शर्मा इस संस्थान के संस्थापना को आकार देने वाले प्रथम निदेशक होंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री गहलोत द्वारा टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेस और महाराष्ट्र इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी-स्कूल आफ गवर्नेंस, पुणे की तर्ज पर राजस्थान में महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट आफ गवर्नेंस एंड सोशल साइन्सेस, जयपुर की स्थापना किया जाना, वर्ष 2020-21 की बजट घोषणा 43 के अन्तर्गत प्रक्रियाधीन है। उस प्रक्रिया के अंतर्गत बुधवार को डा.बी.एम.शर्मा को उस प्रस्तावित महात्मा गांधी इन्स्टीट्यूट आफ गवर्नेंस एंड सोशल साइन्सेस का निदेशक नियुक्त कर दिया गया। सभी सक्षम स्तरों से अनुमोदन के बाद इसके आदेश राज्य शासन द्वारा जारी कर दिये गये।

संपादकीय

क्यों बदल रहे हैं भाजपा के मुख्यमंत्री, सामाजिक समीकरणों का दबाव या फिर और कुछ?

ऐसा लगता है कि भाजपा में मुख्यमंत्रियों के बदलने का दौर है। क्या वजह है इस बदलाव की? मुख्यमंत्रियों की अक्षमता, स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियां, सामाजिक समीकरणों का दबाव या फिर और कुछ? पिछले चंद महीनों में तीन प्रदेशों में चार मुख्यमंत्री, जबकि मोदी के पहले कार्यकाल में एक भी मुख्यमंत्री नहीं बदला। उस समय कहा गया कि जिसे मौका दिया है, उस पर भरोसा करना चाहिए। मुख्यमंत्रियों के इस तरह बदलने का चलन कांग्रेस में रहा है। एक स्वाभाविक-सा सवाल उठता है कि क्या भाजपा का कांग्रेसीकरण हो रहा है? यह शायद इस राजनीतिक परिघटना का अति सरलीकरण होगा। यह भी कहा जाता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी केंद्रीयकरण की राजनीति करते हैं, इसलिए ऐसा हो रहा है। यदि ऐसा है तो पहले पांच साल क्यों कोई मुख्यमंत्री नहीं बदला? खासतौर से राजस्थान और झारखंड में। जहां भाजपा के विरोधी भी कह रहे थे कि मुख्यमंत्री बदल जाए, तो भाजपा जीत जाएगी। इस बदलाव के पीछे कोई एक नहीं कई कारण नजर आते हैं। पहला कारण है, राज्य विशेष की राजनीतिक परिस्थितियां। जैसे उत्तराखंड में त्रिवेंद्र सिंह रावत पार्टी के लिए बोझ बन गए थे। उन्हें बनाए रखने का मतलब था कांग्रेस को वाकओवर देना। फिर बने तीरथ सिंह रावत। महीने भर में ही पार्टी नेतृत्व को समझ आ गया कि गलती सुधारने के चक्कर में और बड़ी गलती कर दी। फिर आए पुष्कर सिंह धामी। आते ही लगने लगा कि सही दिशा मिल गई।

फौरी व्यवस्था के तहत मुख?यमंत्री बने थे विजय रूपाणी: कर्नाटक में बीएस येदियुरप्पा का जाना पहले से तय था। वह 78 वर्ष के हो चुके थे। फिर परिवार के लोगों का सरकार में दखल बढ़ता जा रहा था। पार्टी को वैसे भी पीढ़ी परिवर्तन करना था। और अब गुजरात। विजय रूपाणी जब मुख्यमंत्री बने थे, तभी से तय था कि वह फौरी व्यवस्था के तहत बने हैं। उनके चुनाव के दो कारण थे। एक, उनका निरापद होना और दूसरा, कोई बड़ा जातीय आधार न होना। इसलिए उन्हें बनाने से जाति समूहों की प्रतिस्पर्धा होने का कोई खतरा नहीं था। अब पार्टी को लगने लगा कि 2022 के विधानसभा चुनाव का बोझ रूपाणी के कंधे नहीं उठा पाएंगे। सो पटेल समुदाय को भी आश्वस्त कर दिया कि आप हमारे साथ हैं तो हम भी आपको भूले नहीं हैं, पर क्या सिर्फ इन्हीं वजहों से बदलाव हुआ। बदलाव के दो और बड़े कारण दिखाई देते हैं। एक, राज्यों में भविष्य का नेतृत्व तैयार करने की प्रक्रिया। जो बने हैं, वे बने रहेंगे, यह जरूरी नहीं है, पर हटा ही दिए जाएंगे, यह भी नहीं कह सकते। संसदीय जनतंत्र में नेता बनने के लिए कई गुणों का होना आवश्यक है। संगठन की समझ और उससे तालमेल, अच्छा वक्ता होना, प्रदेश के लिए विजन होना, पर ये सारे गुण बेकार हो जाते हैं, यदि वोट दिलाने की क्षमता न हो। बदलाव का दूसरा बड़ा कारण है कि मोदी-शाह के आने के बाद से पिछले सात सालों में यह देखा गया कि लोकसभा चुनाव में पार्टी को किसी राज्य में जितने वोट मिलते हैं, उसी राज्य में विधानसभा चुनाव में वोट कम हो जाते हैं।

प्रधानमंत्री का अपना वोट है: यह सही है कि पार्टी के अलावा प्रधानमंत्री का अपना वोट है। वह जब खुद के लिए लोकसभा चुनाव में वोट मांगने जाते हैं तो जितने लोग भाजपा का समर्थन करते हैं, वे सब विधानसभा चुनाव में नहीं करते। कई मामलों में यह अंतर 5 से 19 फीसद तक का होता है। इसका सीधा सा मतलब है कि राज्य के नेतृत्व

पर लोगों का उतना भरोसा नहीं रहता। पार्टी इस अंतर को कम करना चाहती है। इसके लिए विश्वसनीय और जनाधार वाले नेता चाहिए। जो मोदी के अतिरिक्त वोट की मदद से हार को जीत में बदल सकें। यह काम बहुत आसान नहीं होता।

कांग्रेस में बदलाव का एक ही आधार, नेहरू-गांधी परिवार के प्रति वफादारी: मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने 13 राज्यों में 19 मुख्यमंत्री बनाए हैं। योगी आदित्यनाथ, हिमंता बिस्व सरमा, सर्वानंद सोनोवाल, देवेंद्र फड़नवीस, त्रिवेंद्र सिंह रावत, तीरथ सिंह रावत, पुष्कर सिंह धामी, जयराम ठाकुर, बिप्लब देब, मनोहर लाल खट्टर, रघुबर दास, लक्ष्मीकांत पारसेकर, प्रमोद सावंत, बीरेन सिंह, पेमा खांडू, आनंदी बेन पटेल, विजय रूपाणी, भूपेंद्र पटेल, बासवराज बोम्मई। इनमें से छह को हटाया जा चुका है। ये तीन राज्यों गुजरात, गोवा और उत्तराखंड से हैं। सर्वानंद सोनोवाल को विचारधारा के प्रति ज्यादा प्रतिबद्ध और पूवरेत्तर में पार्टी के विस्तार में भूमिका निभाने वाले हिमंता बिस्व सरमा के लिए जगह खाली करना पड़ी। फड़नवीस और रघुबर दास सत्ता से बाहर हैं। फड़नवीस, उद्धव ठाकरे के धोखे का शिकार हुए और रघुबर दास अपने अहंकार और दुर्व्?यवहार का। इन बदलावों से एक बात साफ है कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व राज्यों में नेतृत्व की लगातार समीक्षा कर रहा है। इस समीक्षा में वह अपने फैसले को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बना रहा। जहां लगा कि फैसला गलत हो गया, वहां बदलाव में कोई संकोच नहीं किया। आलोचना के डर से जो चल रहा है, उसे चलते रहने नहीं दिया। कांग्रेसीकरण की आशंका जताने वालों को एक बुनियादी अंतर पर ध्यान देना चाहिए। भाजपा में जो भी बदलाव हो रहे हैं, उनका आधार एक ही है कि वह पार्टी के हित में है या नहीं? कांग्रेस में बदलाव का एक ही आधार होता है और वह है नेहरू-गांधी परिवार के प्रति वफादारी। आप परिवार के प्रति वफादार हैं तो सारे गुनाह माफ, पर आप कितने भी काबिल हों और आपकी वफादारी शक के घेरे में हो तो आप इंतजार करते रह जाएंगे।

भाजपा लगातार मजबूत हो रही है और कांग्रेस कमजोर: भाजपा और कांग्रेस की कार्यशैली का फर्क दोनों की राजनीतिक स्थिति में नजर आता है। भाजपा लगातार मजबूत हो रही है और कांग्रेस कमजोर। भाजपा और कांग्रेस की कार्यशैली में यह फर्क तब तक तो बना ही रहेगा, जब तक गांधी परिवार कांग्रेस को चला रहा है। रही बात भाजपा के कांग्रेसीकरण की तो वह उसकी कार्यशैली, विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कारण कभी नहीं हो पाएगा। एक और कारण है, जिसकी वजह से भाजपा का कभी कांग्रेसीकरण नहीं होगा। वह है, भाजपा का हमेशा परिवार रहेगा, लेकिन वह कभी परिवार की पार्टी नहीं होगी। भाजपा में हर तीन साल में राष्ट्रीय और प्रदेश अध्यक्ष बदल जाता है। सामान्य कार्यकर्ता के मन में यह भरोसा है कि वह संगठन और सरकार के शिखर तक पहुंच सकता है।

डॉग्स का साथ इंसानों को देता है एक प्यारा सा एहसास

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों जब भी मैं यूरोप या यू एस के किसी स्टेट में विज़िट करती हूँ, वहाँ के लोगों को अपने देश की तुलना में ज़्यादा तादाद में तरह तरह की ब्रीड्स के डॉग्स के साथ घूमते पाती हूँ । इसका कारण ये है कि डॉग्स का साथ इंसानों को एक प्यारा सा एहसास देता है, बेइंतहाई ख़ुशी से सराबोर कर देता है । पिछली कड़ियों में मैंने आपको कुछ उदाहरण दिये हैं जिनमें बताया है कि किस तरह डॉग्स ने किसी की मदद की। स्टडीज़ से ज्ञात होता है कि हम जब डॉग्स को थपथपाते हैं न् बच्चों, तब हमारा ब्लड प्रेशर ड्रॉप हो जाता है। हार्ट पेशेंट्स के लिए हाई-ब्लड-प्रेशर बहुत प्रॉब्लमैटिक है इसलिए आप समझ सकते हैं कि डॉग्स से दोस्ती ऐसे मरीज़ों की हीलिंग में में किस तरह पॉज़िटिव रोल अदा कर सकती है। वेस्टर्न कंट्रीज़ में तो डॉग्स को थैरेपी डॉग्स के रूप में हॉस्पिटलों

तक में इस्तेमाल किया जाता है।

बच्चों ,आपने ऐपीलैप्सी नाम की बीमारी के बारे में सुना ही होगा । कुछ डॉग्स को इस बात के लिए भी ट्रेन किया जा सकता है कि वो इसके मरीज़ों में फ़िटनेस आने से पहले ही जान जायें और उसके अनुसार एक्ट करके मरीज़ को किसी दुर्घटना होने से बचा लें। क्योंकि फ़िट्स के कारण मरीज़ काम करते करते कभी भी खुद को जला सकता है , इलैक्ट्रिक शॉक लगवा सकता है , लेकिन इन डॉग्स की मरीज़ के दिमाग़ में चल रही विद्युत तरंगों को महसूस करने की जादुई शक्तियों के कारण मरीज़ को इन दुर्घटनाओं से बचाया जा सकता है।

ऐसा ही यूएसए के आरकैनंसा में रहने वाली पैट्सी के साथ हुआ था जो बहुत से दोस्त होने के बावजूद अपने घर में अकेली ही रहा करती थी और ऐपीलैप्सी की मरीज़ होने के कारण बेहद चिंतित थी क्योंकि इसके फिट्स बड़ा नुक़सान पहुँचा सकते हैं।

तभी पैट्सी की एक मित्र ने उसे एक स्पिट्ज़ डॉग गिफ़्ट किया । क़रीब एक हफ़्ते बाद ही एक अजीब सा वाक़या हुआ । पैट्सी फायरसाइड पर रखी कुर्सी पर बैठे हुए कोई किताब पढ़ रही थी कि उसे चाय पीने की तलब हुई । वो उठने ही लगी थी कि उसके डॉगी 'स्नोबॉल' ने कूद कर फिर से कुर्सी पर बिठा दिया और अपने पॉज़ को उसकी कमर पर जकड़ कर उठने ही नहीं दिया । पैट्सी इस डॉग-बिहेवियर को समझने की कोशिश कर ही रही थी कि अचानक उसे ऐपीलैप्सी-फ़िट्स के अटैक आने लगे। जब ये वक़्त ऐसे ही बैठे हुए गुजर गया तब वो उठी और किचन में जाकर स्टोव जलाने लगी। तब उसे एहसास हुआ कि यदि स्नोबॉल ने उसे जबरन रोका नहीं होता तो वो फिट्स के कारण गैस स्टोव पर गिर सकती थी और जल सकती थी । इस घटना के बाद कई बार डॉगी ने पैट्सी को इसी तरह रोक रोक कर हादसों से बचाया। पैट्सी के डॉक्टर को शुरु में तो बेहद अचरज हुआ लेकिन एक दिन खुद अपनी आँखों से देखा तो उन्हें भी यक़ीन आ गया कि डॉगी में कोई शक्ति जरूर है । पैट्सी की बिल्डिंग में डाग्स रखने की परमिशन नहीं थी, पर ये देखकर डॉक्टर ने उसे अपने प्रेसक्रिप्शन में यह लिखकर दिया, 'वन स्पिट्ज़ डॉग नेम ऑव स्नोबॉल टु बी यूज़्ड एज़ रेज़िडेंट-प्रोटेक्टिव-कम्पेनियन एट ऑल टाइम्स' !

-डॉ कविता माथुर

व्यंग्य

आओ पकौड़े बेचें

महेश कुमार केशरी

देश का जी. डी. पी. बढ़ाने के लिए आदमी को अपना योगदान देना चाहिए। भले ही कोई भी काम हो। हमें उसे करने में कोई गुरेज नहीं करना चाहिए। कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता और काम से आदमी की पहचान नहीं होती। तो जो आज के पढ़े लिखे एम. बी. ए. -बी. टेक. किये युवक/ युवतियाँ हों या प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा। सबको कोई ना कोई रोजगार करना चाहिए। चाहे, जलेबी समोसा बेच लो। चाहे फल बेच लो। या चाय ही बेच लो। बेचना भी एक कला है। इसको सीखने की जरूरत होती है। मतलब ये कि जो चीज मुनाफा ना दे रही हो उसको बेच देना चाहिए। कुछ लोग सपने भी बेच दे रहे हैं। इसको सीखे बगैर आप जीवण की वैतरणी पार नहीं कर सकते। भले ही आपके पिताजी ने आपको बी. टेक. या एम. टेक. तक पहुँचाते - पहुँचाते खुद कोट पैंट से लुँगी और गमछे में आ गये हों। भले ही उन्होंने अपना मकान

बच्चों को पढ़ाने और किसी लायक बनाने के लिए बेच दिया हो। या कहीं गिरवी रख दिया हो। उन्होंने ये सोचकर अपने बच्चों को पढ़ाया कि बच्चे पढ़ लिखकर धीरे धीरे सेट हो जायेंगे और आगे चलकर उनके गरीबी के दिन खत्म हो जायेंगे। और जीवन का अंतिम समय बड़ा ही सुखद बितेगा। बच्चे आजीवन किताबों के बोझ से लदे रहे। और ढ़िबरी और इनवर्टर की रौशनी में अपनी आँखें फोड़ते रहे कि चलो अब सेटल होने का समय हो गया है। किताबों के बोझ से राहत मिलेगी, लेकिन, सरकार ने पकौड़े बेचने को भी बढ़िया काम मानते हुए ये मुनादी की है कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। असल काम है पैसे कमाना। इसे आप ए. सी. कमरों में दूसरों के लिए पुल - पुलिया, बाँध बनाने में व्यर्थ में नष्ट ना करें। दूसरों के बेहतर भविष्य और रोडमैप के बारे में सोचना आपका काम नहीं है । बल्कि ये काम सरकार का है। तो सरकार का ये काम है कि कौन एम. बी. ए. करके फल बेचेगा और कौन बी. टेक. करने के बाद समोसे और कचौरी और कौन दसवीं पास करके मंत्री या विधायक बनेगा तो कृपया सरकार की आज्ञा की अवहेलना ना करें और पकोड़े तलकर बेचें। कभी-कभी युवा सोचते हैं कि जब पकौड़े ही तलने थें तो बी. टेक. - एम. बी. ए. क्यों किया..? और, जब बी. टेक. और एम. बी. ए. कर ही लिया है पकौड़े क्यों बेचें? तो आपको सपने बेचने का हुनर सीख लेना चाहिए। कल को आपको भी सपने ही बेचने हैं।

कद्दू के पीले खूबसूरत फूलों का प्रयोग खाने में भी किया जाता है. कई घरों में तो बारिश के मौसम में इन फूलों की पकौड़ियां तली जाती हैं जिसे लोग बड़े ही चाव के साथ खाते हैं. यह कद्दू की तरह ही स्वाद से भरपूर होता है और हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद भी. यह हमारी इम्यूनिटी को बढ़ाने से लेकर पाचन तंत्र आदि को भी मजबूत रखता है.

बड़ा गुणकारी कद्दू का फूल

खांसी-सर्दी से रखता है दूर

कद्दू के फूलों में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाई जाती है जो हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में काफी मदद करता है. इस वजह से हम सर्दी और खांसी जैसी समस्याओं से बचे रहते हैं. इसके अलावा, यह शरीर में आयरन के अवशोषण को तेज करता है जिससे शरीर किसी भी तरह के संक्रमण से बचाव के लिए पहले से तैयार रहता है.

आंखों के लिए बेहतर

इसमें विटामिन-ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो आंखों की रोशनी को ठीक रखने में काफी सहायक है. यह आंखों को प्रकाश परिवर्तनों के साथ समायोजित करने के लिए सक्षम बनाता है और आंखों को नम रखने में मदद करता है. विटामिन-ए रात की दृष्टि में भी सुधार करता है और ड्राई आंखों की समस्या को भी रोकता है. रतौंधी की समस्या से भी यह बचाता है.

इम्यूनिटी बढ़ाए

कद्दू के फूल में आयरन टी लिम्फोसाइटों के विभेदन, प्रसार और रोगजनकों से लड़ने वाली प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों के उत्पादन जैसे कई प्रतिरक्षा कार्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी है. यह किसी बीमारी से रिकवरी में भी मदद करता है.

पाचन को बनाए दुरुस्त

कद्दू के फूलों में मौजूद फाइबर इंटस्टाइन को साफ करता है और कब्ज की समस्या से छुटकारा दिलाता है. इसके सेवन से पेट काफी देर तक भरा हुआ लगता है जिससे ज्यादा खाने की इच्छा नहीं होती और वजन भी नियंत्रित रहता है.

हड्डियों के लिए फायदेमंद

कद्दू के फूल में पर्याप्त मात्रा में फास्फोरस और कैल्शियम तत्व होते हैं जो हड्डियों और दांतों के रखरखाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यह शरीर की हड्डियों को मजबूत रखता है और मसूड़ों व दांतों के इनेमल को हेल्दी रखता है.

टेस्ट से पता करें हरी सब्जी में केमिकल

सब्जियों को फ्रेश और हरा दिखाने के लिए इन पर हानिकारक केमिकल्स का इस्तेमाल भी किया जा सकता है. ये काम इतनी सफाई से होता है कि अच्छे-अच्छों की आंखें धोखा खा सकती हैं. हालांकि सेहत न बिगड़े, इसके लिए मिलावट का पता लगाना भी जरूरी है. अगर आप पता लगाना चाहते हैं कि आपकी हरी सब्जी में जहरीले केमिकल्स मिलाए गए हैं या नहीं, तो ये आसान टेस्ट आपकी मदद कर सकता है.

फूड सेफ्टी ऐंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (FSSAI) ने एक आसान तरीका बताया है, जिससे आप हरी सब्जी में रंगों के इस्तेमाल का पता कर सकते हैं. FSSAI ने हरी सब्जियों में मैलेकाइड ग्रीन को जांचने का तरीका ट्वीट किया है. इसके लिए आपको एक रुई का टुकड़ा पैराफीन लिक्विड में डुबाना होगा. इसके बाद भिंडी या किसी भी गहरी हरी सब्जी की सतह पर मलना होगा. अगर रुई का रंग बदल जाए तो इसका मतलब है कि सब्जी में रंग का इस्तेमाल किया गया है. रुई हरी हो जाती है तो मतलब आपकी सब्जी में हानिकारक केमिकल है.

क्या है मैलेकाइट ग्रीन

मैलेकाइट ग्रीन एक नुकसानदायक डाई है. इसका इस्तेमाल कलरिंग एजेंट के रूप में किया जाता है. इससे ज्यादातर मटर, भिंडी, पालक जैसी हरी सब्जियां रंगी जाती हैं. इसके इस्तेमाल से सब्जियां हरी, चमकदार और एकदम ताजी दिखने लगती हैं. केमिकल डाई हेल्थ के लिए काफी नुकसानदायक होती हैं. ये शरीर में पहुंचकर म्यूटोजेनेसिस, क्रोमोसोमल फ्रैक्चर कर सकती हैं. इनसे कैंसर जैसे घातक रोग हो सकते हैं.

क्रोंचासन से बेहतर होगा ब्लड सर्कुलेशन

क्रोंचासन दो शब्दों (क्रोंच और आसन) के मेल से बना है. इसमें क्रोंच का मतलब सारस है और आसन का अर्थ मुद्रा है. इस आसन के अभ्यास के दौरान उठा हुआ पैर सारस की गर्दन की भांति दिखाई देता है, इसलिए इस आसन का नाम क्रोंचासन रख गया है. अगर आप रोजाना इस आसन का अभ्यास करते हैं तो इससे आपको ढेरों स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं.

अभ्यास का तरीका

सबसे पहले योगा मैट पर दंडासन की मुद्रा में बैठें. इसके बाद अपने बाएं पैर को घुटने से मोड़ते हुए पीछे की ओर ले जाएं और कूल्हों के नीचे दबाएं. अब अपने हाथों से दाएं पैर का तलवा पकड़कर इसे ऊपर की ओर उठाएं और पैर को सिर के पास लाने की कोशिश करें. इस अवस्था में 30 सेकंड तक रुकें और फिर धीरे-धीरे सामान्य हो जाएं. इसके बाद इसी प्रक्रिया को दूसरे पैर से भी दोहराएं.

जरूर बरतें ये सावधानियां

इस आसन का अभ्यास करना थोड़ा कठिन है, इसलिए इसके हर स्टेप की तरफ धीरे-धीरे बढ़ें. अगर आपके हाथ-पैर या पीठ में दर्द है तो इस आसन का अभ्यास करने से बचें. इस आसन के अभ्यास के दौरान पैरों को उतना ही उठाएं, जितना आप आसानी से उठा सकते हैं क्योंकि जबरदस्ती करने से पैरों में दर्द हो सकता है. पीरियड्स और गर्भावस्था के दौरान महिलाएं इस आसन का अभ्यास न करें.

फायदे

- क्रोंचासन शरीर का ब्लड सर्कुलेशन बेहतर करने में सहायक है.
- यह आसन पीठ, पैरों और हाथों की मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करता है.
- शरीर की संतुलन शक्ति भी बढ़ती है.
- पाचन तंत्र की कार्यक्षमता को बढ़ाने में काफी मदद मिलती है.
- किडनी पर भी सकारात्मक असर पड़ता है.
- हृदय के स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है.
- तनाव जैसे मानसिक विकारों से भी राहत दिला सकता है.

विशेष टिप्स

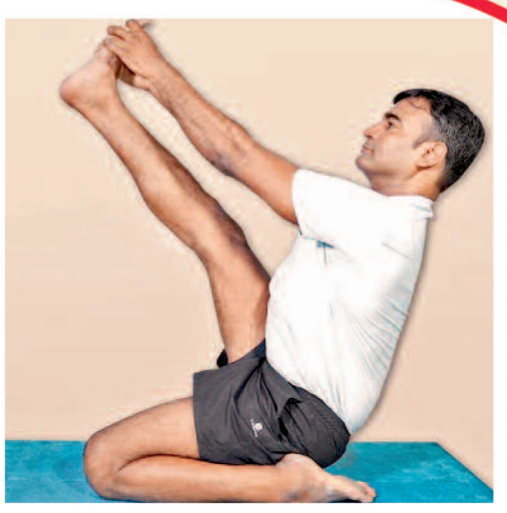

अगर आप पहली बार क्रोंचासन का अभ्यास करने वाले हैं तो योग गुरु की मदद जरूर लें. अगर इस आसन का अभ्यास करते समय आप शरीर का संतुलन नहीं बना पा रहे हैं तो कुछ समय तक इस योगासन का अभ्यास दीवार के सहारे करें. अगर इस आसन का अभ्यास करने के दौरान आपको पैरों को ऊपर की ओर करने में परेशानी हो तो शारीरिक क्षमता से अधिक बल न डालें.

दुख बांटने से कम होता है, यह बात तो आपने सुनी ही होगी. मगर एक हालिया अध्ययन की मानें तो दुख-दर्द बांटने से अल्जाइमर का जोखिम भी कम होता है. एक नए अध्ययन में पाया गया है कि वयस्कता में सहयोगात्मक सामाजिक संपर्क याददाश्त में होने वाली गिरावट को रोकने की क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है.

मन की बातें कहने से भागेगा अल्जाइमर

शोधकर्ताओं ने पाया कि किसी ऐसे भरोसेमंद व्यक्ति का पास होना, जिससे आप दिल की बातें साझा कर सकते हैं, वह आपकी याददाश्त को कम होने से बचा सकता है. जरूरत के वक्त ऐसे व्यक्ति के साथ गम बांटना संज्ञानात्मक लचीलेपन से जुड़ा होता है. कई न्यूरोलॉजिस्ट मानते हैं कि मानसिक रूप से सक्रिय रखने वाली गतिविधियों, शारीरिक व्यायाम और सकारात्मक सामाजिक बातचीत में शामिल होने से इस लचीलेपन को बढ़ाया जा सकता है.

संज्ञानात्मक लचीलापन बढ़ेगा

संज्ञानात्मक लचीलापन मस्तिष्क की उम्र बढ़ाने और बीमारी के प्रभावों के लिए एक बफर के रूप में काम करता है. यह अध्ययन इस बात को साबित करता है कि लोग अपने लिए या उन लोगों के लिए कदम उठा सकते हैं जिनकी वे सबसे अधिक परवाह करते हैं. संवाद की कमी उम्र बढ़ने के साथ-साथ याददाश्त को कम कर देगी. वहीं किसी से बातचीत करते रहना अल्जाइमर रोग के लक्षणों के विकास को रोक सकता है.

LIFESTYLE

बनाई जाए सामाजिक और साझी व्यवस्था

समय की मांग है वानप्रस्थ संकुल

वानप्रस्थ की परिकल्पना जीवन के उस कालखंड के लिए है जब व्यक्ति अपने गृहस्थ जीवन के सामान्य उत्तरदायित्व पूर्ण कर लेता है और भौतिक जीवन का नेतृत्व नयी पीढ़ी को सौंप, वृहद समाज के कल्याण और अपनी अध्यात्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ता है. ये समय आयु के वर्षों में नहीं, वरन व्यक्ति के अपने चिंतन के आधार पर तय होता है. वानप्रस्थ आश्रम की परिकल्पना समाज में पीढ़ियों के संघर्ष को रोकने में भी सहायक हो सकती है. जीवन की गुणवत्ता और चिकित्सीय विधानों में उन्नति के कारण जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, आने वाले समय में समाज में बुजुर्गों की संख्या बढ़ेगी और साथ ही उनसे सम्बंधित समस्याएं भीं. ऐसे में "वानप्रस्थ संकुल" की रचना समय की मांग है. ये आपके अभी तक देखे या कल्पना किए हुए वृद्धाश्रम नहीं होंगे जहां केवल निरीह और परिवार से परित्यक्त बुजुर्ग मृत्यु की प्रतीक्षा में समय काट रहे हों, ये सामाजिक उत्तरदायित्व और आध्यात्मिक चेतना के जागृत शक्ति केंद्र होंगे. इनकी प्रेरणा हमारी आश्रम व्यवस्था के वानप्रस्थ आश्रम से ली जा सकती है और इनकी संरचना हमारी आज की आवश्यकताओं के अनुरूप हो सकती है.

समान आयु वर्ग के साथियों की जरूरत

बुजुर्ग हमें अपने आस-पास न जाने कितने परिवारों में मिल जाएंगे. वो शारीरिक रूप से किसी पर आश्रित नहीं हैं, अपना काम करने में समर्थ हैं. उनकी भौतिक आवश्यकताएं सीमित हैं. उनको आवश्यकता है तो समय बिताने और बात करने के लिए समान आयु वर्ग के साथियों की. बड़े नगरों के उच्चवर्गीय और विकसित क्षेत्रों के बड़े-बड़े घरों में बुजुर्ग दम्पति या दोनों में से शेष रहा कोई एक, अकेले रह रहा है. बच्चे शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी जैसे कारणों से दूसरे नगरों या देशों में रह रहे हैं. इनका जीवन अलग प्रकार के भय से ग्रस्त है. कई परिवारों में आर्थिक कारणों से, नई पीढ़ी के पास समय के आभाव से, पीढ़ियों में सामंजस्य के अंतर के कारण ऐसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं कि बुजुर्गों का अपने पुत्र या पुत्री के परिवार के साथ रहना कठिन हो जाता है. 2 पीढ़ियां एक दूसरे से जूझते हुए जबरन साथ रहती हैं. दोनों ही मानसिक अवसाद से ग्रस्त.

इतिहास में हैं कई उदाहरण

भक्त प्रहलाद पुत्र का विवाह और माता का देहावसान होने पर पुत्र का राज्याभिषेक कर वानप्रस्थी हो गए थे. धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती महाभारत युद्ध के पश्चात वानप्रस्थी हुए. दिग्विजयी चन्द्रगुप्त मौर्य ने मात्र 52 वर्ष की आयु में वानप्रस्थी होने का निर्णय ले लिया था. आश्रम व्यवस्था से प्रेरित इन वानप्रस्थ संकुलों में आने का निर्णय लेने वाले बुजुर्ग, यहां आकर अपनी रुचि के अनुसार उत्पादक और समाजसेवा के कार्य कर सकेंगे, अपनी उन अभिरुचियों पर काम कर सकेंगे जो जीवन की आपाधापी में नैपथ्य में पड़ी रह गईं, इसके साथ ही यहां आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने वाला मार्गदर्शन भी उपलब्ध होगा. ये समाज से कटा निराश्रित समूह नहीं, वरन समाज को समर्पित सशक्त साधना केंद्र होगा. यहां आकर रहना लज्जा का नहीं, सम्मान का द्योतक होगा. वानप्रस्थ संकुलों के निर्माण से आने वाले समय में बढ़ने वाली बुजुर्ग जनसंख्या के नियोजन की एक पूर्व व्यवस्था हो सकेगी. कुछ धार्मिक संस्थाओं और केन्द्रों ने ऐसे प्रयास किए हैं किन्तु वे उन संस्थाओं से जुड़े लोगों तक ही सीमित हैं. ऋषिकेश, वृन्दावन जैसे स्थानों पर भी ऐसे कुछ केंद्र हैं किन्तु उन तक अत्यंत सीमित जनसंख्या की ही पंहुच है. समय की मांग है कि हम वृद्धाश्रम की नकारात्मकता से बाहर आएं, वानप्रस्थ संकुल की संकल्पना करके उसे क्रियान्वित करें.

बदली हुई सामाजिक परिस्थितियां

- बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में ज्यादातर एक या दो संतान वाले परिवार हैं. ऐसे में यदि बच्चे किसी भी कारण से बाहर जाते हैं तो स्वाभाविक है परिवार के बुजुर्गों को अकेले ही रहना होगा. न तो सारे बुजुर्ग बच्चों के साथ बाहर जाने को तैयार होंगे और न ही सारे बच्चे ऐसी स्थिति में होंगे कि उन्हें साथ ले जा सकें. इस प्रकार प्रत्येक नगर में कार्यरत कुछ परिवारों के बुजुर्ग दूसरे नगरों में अकेले ही रह रहे होंगे.
- क्या इस परिस्थिति से निपटने के लिए एक सामाजिक और साझी व्यवस्था नहीं बनाई जा सकती? प्रतिदिन समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया में बुजुर्गों से सम्बंधित व्यथित करने वाले समाचार आते हैं. केंद्र की राजनीति में रहे प्रमुख राजपरिवार की एक महिला और एक बड़े उद्यमी को अपने आर्थिक अधिकारों के लिए न्यायालय की शरण लेनी पड़ रही है.
- जिन परिवारों के बुजुर्ग वृद्धाश्रम में चले जाते हैं, उनको अत्यंत हेय दृष्टि से देखा जाता है. इसलिए कई बार केवल उस सामाजिक भर्त्सना से बचने के लिए लोग बुजुर्गों को मजबूरी मान, घर में रख लेते हैं और हर समय कोसते रहते हैं. यहां तक की पूरी बात बुजुर्गों के पक्ष की है.
- किन्तु ये समस्या इतनी सरल भी नहीं. पूरा दोष नई पीढ़ी पर नहीं डाला जा सकता. कई बार बुजुर्गों का आवश्यकता से अधिक मोह, नई पीढ़ी के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप और हठधर्मिता भी परिवार में उनकी उपेक्षा का कारण बनती है.

'मैं हिन्दी मेरी जुबानी'

अंजना मनोज गर्ग, कोटा

मैं हिन्दी हूँ।अब कुछ दिनों चर्चा में रहुंगीं क्योंकि मेरा दिन (दिवस)जो आने वाला है और यह दिवस एक तरह से कहूँ तो मेरा 'दिन' ही हैजो किसी के मरने के बाद मनाया जाता है कुछ ऐसा ही हाल मेरा भी है।

14सितम्बर, जो मेरा दिवस घोषित किया गया है बस उसी दिन मेरी प्रशंसा होगी, सांगोपांग व्याख्या होगी मेरी, थोडा सा जीने ही लगुंगी कि फिर अगले दिन से हाशिये पे डाल दी जाउंगी और श्वासहीन होती हुयी मैं शनैः शनैः मृतप्रायः सी हो जाउंगी।यही क्रम रहता है हर वर्ष।

अब यहाँ मै अपना विकास , अपना महत्व नही कहना चाहती, मैं अपनी पीड़ा, अपना दुख कहना चाहती हूं जिससे मैं आज लबालब भरी हुयी हूँ।

यूं तो एकछत्र राज मेरा कभी नहीं रहा, स्वतंत्रता से पहले मैं और मेरी सहोदरा उर्दू हम साथ - साथ चलते थे। हम दोनों बहिनें आम बोलचाल में, दफ्तरी राजकाज में, उच्च शिक्षा में, साहित्य में सभी जगह शिखर पर ही सुशोभित होते थे।

यद्यपि उस समय राज तो अंग्रेजी शासन का था किंतु भारत के आमजन के हृदय में हमारा ही राज था। हम दोनों को बड़ी ही सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता था। अंग्रेजों के जाने के बाद तो लगता था कि मेरे घर, मेरे देश में अब राजकाज में भी बहुंगी और आम काम में भी मैं ही।

14 सितंबर 1949 को मुझ हिंदी को जब राजभाषा घोषित किया गया तो मेरी खुशियों का ठिकाना नहीं था। मैं सातवें आसमां पर थी किंतु क्या पता था कि अपनी ही धरती पर सातवें आसमान से इस तरह गिरूंगी कि अनंत काल तक मन तन से घायल ही रहूंगी, उठ ही नहीं पाऊंगी।

अंग्रेज तो देश छोड़कर चले गए किंतु वह अपनी अंग्रेजीयत इस कदर मेरे भारत वासियों के हृदय में बो गए कि वो अपना तो सब कुछ भूल गये अंग्रेजियत ही फकत याद रही।

बस यहीं से मेरे दुर्दिनों की शुरुआत हुयी। सुकून की भाषा कहे जाने वाली मैं हिंदी, इनकी अपनी हिंदी गंवारो एवं शर्म की भाषा कहे जाने लगी । मेरे भारत के सारे कार्य इंग्लिश में किये जाने लगे। भारतीय विद्यालय पब्लिक कन्वेंट स्कूल में परिवर्तित होने लगे क्योंकि अंग्रेजी पढ़ना अब आवश्यक एवं उच्च स्तरीय जीवन का प्रतीक बनने लगा था। अंग्रेजी अट्टहास करती हुयी मेरे भारत के हर कोने में अपना पंजा पसार रही थी। मैं अपने ही घर में सहमने लगी थी, किंतु आशा की एक किरण अभी भी मेरे हृदय में बाकी थी। पर आशा की यह किरण भी एक भ्रम ही साबित हुयी मेरे लिए कालांतर में।

मुझे दिनों दिन और उपेक्षित एवं अछूत जैसा बना दिया गया।

मुझे बड़ा दुख होता है कि विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा का दर्जा होने के बावजूद और 52 बहुत सुंदर एवं तर्क संगत छनकते मनकते से मेरे 'ककहरे' पर यह मात्र 26 वर्ण वाली अंग्रेजी राज कर रही है। मेरा यह ककहरा आज मेरे आंचल में सहमा दुबका बैठा सिसक रहा है।

14 सितंबर को मेरे तर्पण दिवस पर जगह-जगह आयोजन किए जाएंगे ।मेरे महत्व पर भाषण, व्याख्यान होंगे। मेरी तस्वीर को माला पहनाई जाएगी और जो विद्वान स्टेज पर मेरे महत्व पर भाषण देंगे ,वही नीचे आकर कहेंगे 'सब बेकार बातें हैं, इंग्लिश के बिना काम नहीं चलता'। बस एक दिन का तमाशा और दूसरे दिन से फिर वही।

किंतु उन सब में दोष किसी तीसरे का नहीं है। मेरे ही अपने भारतवासियों का है। अरे मेहमान अंग्रेजों के जाने के साथ ही अंग्रेजी को भी विदा कर देना चाहिए था किन्तु नहीं सिरमाथे अंग्रेज नहीं तो अंगरेजी ही सही, हमें तो सदा पराधीन ही रहना है तन से नही तो मन से ही सही। जब मेरे अपने घरवालों की वजह से मेरा यह हाल हुआ है तो मैं हिंदी मेरी यह पीडा कहूं भी तो किससे।

ज्ञानकथा

क्षमा

देवराज इंद्र के पुत्र जयंत को लगता था कि वह जो भी करेगा, सब सही है. रामायण में वनवास के समय श्रीराम, सीता और लक्ष्मण चित्रकूट में रह रहे थे. एक दिन श्रीराम और सीता बैठकर कुछ बातचीत कर रहे थे. उस समय जयंत ने कौए का वेश बनाया और सोचा कि मैं परीक्षा लेता हूं कि राम कितने बलशाली हैं? ऐसा सोचकर कौए ने सीता के पैरों में चोंच मार दी. सीता को दर्द हुआ तो श्रीराम ने छोटे से तिनके का बाण बनाया और अभिमंत्रित करके जयंत के पीछे छोड़ दिया. ब्रम्हास्त्र की तरह तिनके का बाण जयंत के पीछे चलने लगा तो वह डरकर भागने लगा. सबसे पहले वह अपने पिता इंद्र के पास पहुंचा. इंद्र ने उससे कहा, 'तूने श्रीराम का अपराध किया है तो मैं तुझे नहीं रख सकता.' जयंत कई जगह भागा, कई लोगों से मदद मांगी, लेकिन उसे कहीं भी मदद नहीं मिली. रास्ते में उसे नारद मिल गए. नारद ने जयंत से पूरी घटना पूछी. नारद की वजह से वह तीर थोड़ी देर वहीं रुक गया, क्योंकि वे देवर्षि थे. पूरी बात समझने के बाद नारद ने कहा, 'जयंत, तुम भूल कर रहे हो. गलती तुमने सीता और राम के प्रति की है और चाहते हो कि तुम्हें कोई दूसरा बचाए? ऐसा नहीं हो पाएगा. जाओ श्रीराम से क्षमा मांगो. वह तुम्हें क्षमा करेंगे, उसके बाद ही तुम बच पाओगे.' जयंत ने ऐसा ही किया. श्रीराम ने जयंत से कहा, 'तुम्हें दंड तो मिलेगा, लेकिन मृत्युदंड नहीं.' ऐसा कहकर श्रीराम ने उसकी एक आंख में तीर मारा और उसे जीवित छोड़ दिया.

सीख - जिस व्यक्ति के प्रति हमसे कोई अपराध हुआ है, सबसे पहले उसी व्यक्ति से हमें क्षमा मांगनी चाहिए. कुछ लोग अपराध करते हैं और कुछ पुण्य करके सोचते हैं कि पाप कट जाएंगे. यह सही नहीं है. हमें गलत काम करना ही नहीं चाहिए और अगर कुछ गलत काम हो गया है तो उसके लिए क्षमा जरूर मांगनी चाहिए.

निजी अस्पतालों के भरोसे बुजुर्ग

एक सर्वेक्षण में यह खुलासा हुआ है कि ढलती उम्र में आधे से भी अधिक बुजुर्गों को अपनी सेहत की देखभाल के लिए दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है. बुजुर्गों की रुग्णता से संबंधित आंकड़े प्राप्त करने के लिए उनकी बीमारी और अस्पताल में भर्ती होने के मामलों को शामिल किया गया है. स्वास्थ्य की देखभाल में होने वाले खर्च संबंधी आंकड़ों में अस्पताल में भर्ती होने, निदान, डॉक्टरों की फीस, दवाइयों, बेड चार्ज और परिवहन समेत अन्य गैर-मेडिकल खर्चों को भी शामिल किया गया है. सर्वेक्षण में शामिल 27,245 बुजुर्गों में 50.3 प्रतिशत पुरुष और 49.7 प्रतिशत महिलाएं थीं. वहीं, 9.2 प्रतिशत ग्रामीण और 8.4 प्रतिशत शहरी बुजुर्गों की उम्र 80 वर्ष से अधिक थी और 57.4 प्रतिशत बुजुर्ग निरक्षर थे. अध्ययन के दौरान पाया गया कि 30 प्रतिशत से अधिक बुजुर्ग गत 15 दिनों से किसी बीमारी से पीड़ित थे, जबकि बीते एक साल के दौरान अस्पताल में भर्ती होने वाले बुजुर्गों की संख्या 8 प्रतिशत थी. 80 साल की उम्र के बुजुर्गों के बीमार होने का अनुपात भी कम उम्र के लोगों की अपेक्षा अधिक पाया गया है.

निम्न आय वर्ग ज्यादा परेशान

सर्वेक्षण से एक बात यह भी उभरकर आई है कि गरीबों की अपेक्षा संपन्न लोग बीमारियों का अधिक शिकार बनते हैं और अस्पतालों में भर्ती होने के मामले भी उनमें अधिक देखे गए हैं. गरीब बुजुर्गों की अपेक्षा संपन्न वर्ग के बुजुर्ग अस्पताल में इलाज कराने के लिए 3 गुना से अधिक खर्च करते हैं. शहरी क्षेत्रों के संपन्न बुजुर्गों के मामले में यह आंकड़ा 6.6 गुना और ग्रामीण बुजुर्गों के मामले में 1.9 गुना अधिक है. इससे स्पष्ट है कि निम्न आय वर्ग के बुजुर्गों को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है. अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि बीमारियां तो बढ़ रही हैं, पर उसके अनुपात में बजटीय आवंटन नहीं बढ़ रहा है. निकट भविष्य में बुजुर्गों की पुरानी बीमारियों के मामले में स्वास्थ्य देखभाल से जुड़ी रणनीतियों को विशिष्ट रूप से उपचार पर केंद्रित करने की जरूरत है. इसके साथ ही बीमारियों की रोकथाम और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देना भी जरूरी है.

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र

राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो 64 प्रतिशत मामलों में बुजुर्ग निजी अस्पतालों और 35.9 प्रतिशत मामलों में सार्वजनिक अस्पतालों का उपयोग करते हैं. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों को आधार माना जाए तो वहां भी इसी तरह का पैटर्न देखने को मिलता है. ग्रामीण इलाकों में 61 प्रतिशत मामलों में निजी अस्पतालों और 38.6 प्रतिशत मामलों में सार्वजनिक अस्पतालों का उपयोग होता है. इसी तरह शहरों में भी 68.6 प्रतिशत मामलों में निजी अस्पतालों और 31.4 प्रतिशत मामलों में सार्वजनिक अस्पतालों का उपयोग होता है. अध्ययनकर्ताओं का कहना यह भी है कि पुरुष एवं महिलाओं में बीमारियों से ग्रसित होने और अस्पतालों में इलाज कराने के मामले समान रूप से दर्ज किए गए हैं. हालांकि, विभिन्न वर्गों के बुजुर्गों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं पर अस्पताल में इलाज का खर्च कम होता है. अध्ययनकर्ताओं के अनुसार बुजुर्गों की सेहत और उनकी बेहतर जिंदगी से जुड़ी किसी भी रणनीति में विभिन्न वर्ग के लोगों के स्वास्थ्य स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग में असमानता को दूर करने के प्रयासों को शामिल करना जरूरी है. बीमारियों से ग्रस्त होने और उससे जुड़े खर्च की सही समझ हो तो उम्रदराज लोगों के बेहतर स्वास्थ्य और उनकी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चत करने में मदद मिल सकती है. यह अध्ययन इस दिशा में कारगर हो सकता है.

कविता

जब तक सत्ता तब तक जय जयकार

जब तक सत्ता तब तक जय जयकार
पहले प्रशाशन जनता के द्वार होता था
सरकार बदलने के बाद जनमंच हो गया
लोगों की समस्याओं का होता हैं निपटारा
काम वहीं है दोनों में बस नाम का प्रपंच हो गया
अधिकारी जो कुंभकर्ण की नींद सोते थे
करते नहीं थे लोगों के जो काम
उड़ाते थे मौज सरकारी गाड़ियों में घूम कर
करते थे ए सी लगे कमरों में आराम
अब ए सी से बाहर निकल कर पसीना बहा रहे हैं
जनमंच आने से पहले ही निपटा रहे है लोगों के काम
जूते जिनके घिस जाते थे दफ्तरों के चक्कर काटते
उनको मिल गया अब जनमंच से बहुत आराम
लोगों के काम करने के लिए ही रखा है
बदले में हर महीने मिलती हैं मोटी पगार
अभी भी कुछ टरकाते रहते हैं लोगों को
घुस लेते हैं पर कुछ नहीं कर पाती सरकार
पर कई बार यह जनमंच झंडमन्च भी बन जाते है
जब आपस में लोग किसी मुद्दे पर मरने मारने पर आते है
मंत्री लोगों की नज़र में हीरो बनने के लिए
कर्मचारियों की सरे आम झंड कर जाते हैं
घमंड किस बात का क्यों हेकड़ी दिखाते हो
लोगों के सामने क्यों खुद को तमाशा बनाते हो
सत्ता परिवर्तनशील है बदल जाती है सरकार
मंत्री नहीं रहते तब उतर जाती है झंडी और कार
सत्ता के पीछे भागता है सारा ज़माना
सत्ता जब नहीं रहती तो मिलती है फटकार
जब तक सत्ता में रहता है आदमी
तब तक ही करते हैं लोग जय जयकार....

रवींद्र कुमार शर्मा
बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

जब आपस में भिड़ गए 2 बुजुर्ग

सोशल VIRAL

कमाल का एनर्जी लेवल

सोशल मीडिया पर हमेशा कोई न कोई वीडियो छाया रहता है. इनमें कुछ वीडियो तो ऐसे होते हैं, जिन पर लोगों को यकीन तक नहीं हो पाता है. वहीं, कुछ को देखकर लोगों का दिन बन जाता है. एक ऐसा ही मजेदार वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया गया है, जिसे देखने के बाद पहले तो आप हैरान होंगे, लेकिन आपको मजा भी आएगा. क्योंकि इस वीडियो में 2 बुजुर्गों में जिस तरह की एनर्जी दिख रही है, उसने अच्छे-अच्छों के पसीने छुड़ा दिए हैं.

दंग रह गए लोग

आमतौर पर जिस उम्र में लोग ठीक से उठ-बैठ नहीं सकते, घूम नहीं सकते, उस उम्र में 2 बुजुर्ग जबरदस्त फाइट करते नजर आ रहे हैं. बुजुर्गों का अंदाज देखकर एक पल के लिए लोग दंग रह गए और वीडियो को बार-बार देख रहे हैं. इस वीडियो में, एक खेत में दो बुजुर्ग काफी एनर्जी में नजर आ रहे हैं. उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वह किसी से भी दो-दो हाथ करने के लिए तैयार हैं. इसके बाद दोनों जिस तरह से एक-दूसरे पर टूटते हैं, उसने लोगों को हैरान कर दिया.

खुशी...

खुशी अपने अन्तः कारण को जीवंत रखने का एक इंजाएम है,लेकिन खुशी की भी दो अवस्थाएं है।एक जिसमे हमारे मन में अनंत अभिलाषाएं है लेकिन अभावों की वजह से हम उन्हें हासिल नहीं कर पा रहें है।इस अवस्था में जैसे ही मौका मिलता है हम उस खुशी को महसूस करते हैं, फिर नई इच्छाएं जागृत होतीं है और जीवन मृगतृष्णा की तरह चलता रहता है।दूसरी अवस्था है खुशी का महसूस ही न होना। हमारे चहु ओर खुशी बिखरी पड़ी है लेकिन वो सब बेमानी है।इस अवस्था को हम अवसाद कहते है।अन्तः स्थल से सुख दुख से उभर जाना अवसाद के लक्षण है।अलौकिक दृष्टि से देखें तो जीवन का अंतिम सत्य सुख दुख से ऊपर उठना ही है,लेकिन लौकिक लिहाज से यह बहुत कष्ट प्रद है।संसार में हम इन खुशियों के पीछे भागते हैं, उससे ही जीवन सार्थक लगता है।हमें अपने अंदर की इन खुशियों को जीवंत रखना है इनसे ही जीवन में रस आता है वरना नीरस जीवन एक सजा है।जीवन को जीवंत बनाये रखिये अपने अंदर जीने की जिजीविषा को जीवित रखिये।

रश्मि वैभव गर्ग, कोटा

व्यापार और कानून में होते रहते हैं निरंतर परिवर्तन

विपिन श्रीवास्तव

व्यवसायिक स्थान को खरीदना, बेचना अथवा किराये पर लगाना एक जटिल प्रक्रिया है जो एक व्यापक ज्ञान और कौशल के इर्द-गिर्द घूमता है, जिसके लिए बॉन्ड के लिए बाजार का क्षेत्र, बाजार की आवश्यकता, वाणिज्यिक व्यवहार, क़ानूनी दस्तावेजों के मूल्याकन की आवश्यकता अनिवार्य है,अनुभवहीन रियल एस्टेट एजेंट्स व्यवसायिक स्थान मालिक और किरायेदार के बीच विवाद में पड़ने के मुख्य कारण होते है, जोकि उचित नहीं है, इस कारण से पेशेवर, अनुभवी, व्यवहारकुशल, जिसका व्यवसायिक स्थान लीजिंग एवं बिक्री पूर्व अनुभव रहा हो तथा रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

व्यापार और कानून में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं, जो कि कानूनी, तकनीकी और वित्तीय प्रवृत्तियों के आधार पर वाणिज्यिक प्रवृत्ति समझौते को नियंत्रित करते हैं, अधिकांश व्यवसायिक संपत्ति या व्यवसाय के मालिकों को पट्टों का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है अतः वह वाणिज्यिक और कानूनी सलाह की आवश्यकता को उचित रूप से समझ नहीं पाते, जो की बाद में कानूनी विवाद का कारण बनता है, विशेष रूप से उन लोगों के मामले में जो पहली बार अपनी व्यावसायिक संपत्ति के लिए पट्टे के व्यवसाय में प्रवेश कर रहे हैं। एक पट्टा और उसके खंड स्पष्ट रूप से सरल, मानक और स्वीकार्य प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन आकस्मिकताओं और जटिलताओं के कारण यह सच नहीं है, प्रत्येक स्थिति अलग है और प्रायः किसी भी व्यवसायिक सम्पति को खरीदने, बेचने अथवा किराए हेतु देने, पट्टे से संबंधित किसी अन्य दस्तावेज के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करना, किसी भी जमा या अन्य धन का भुगतान,पट्टे पर दिए गए परिसर पर कब्जा करना इन सभी मामलों में सलाह की आवश्यकता होती है जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए। उचित सलाह के साथ, पट्टे से आपको और आपके व्यवसाय को होने वाली किसी भी समस्या को आपके ध्यान में लाया जाता है, जिसमें ऐसे खंड शामिल हैं जिनके परिणामस्वरूप व्यवसायिक सम्पति मालिक को कानूनी समस्या एवं उसके दुष्प्रभाव के कारण अतिरिक्त धन के खर्च को रोका जा सके, व्यवसायिक सम्पति को खरीदने, बेचने अथवा किराये हेतु पट्टेदार, खरीदार अथवा किरायेदार के लिए बातचीत करने और संतुष्टि प्राप्त करने तथा नियम और शर्तो पर विचार आवश्यक है, एक बार उचित सलाह प्राप्त हो जाने के बाद समय एवं धन का दुरपयोग रोका जा सकता है और भविष्य में होने वाली कानूनी प्रक्रियाओं से बचाव संभव हो जाता है। कानूनी और वित्तीय सलाह के अलावा, व्यापार और संपत्ति की सलाह भी लेनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि व्यापार और संपत्ति के अनुपालन हेतु व्यवसायिक पट्टा सही है। विगत महामारी से उबरने के बाद व्यवसायिक सम्पतियो के खरीदने, बेचने और किराये पर प्राप्त करने में बाजार में उछाल देखा जा रहा है, विश्व बैंक ने एशिया प्रशांत के लिए व्यवसायिक सम्पतियो में लगभग 7.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का अनुमान लगाया है। जुलाई 2020 से दिसंबर 2020 तक भारत के शीर्ष 8 प्रमुख शहरों में कार्यालय को किराये हेतु स्थान लेनदेन 22.2 मिलियन स्क्वॉयर फिट दर्ज किए गए हैं, जिसमे नई सम्पतियों का योगदान 17.2 मिलियन स्क्वॉयर फिट रहा है, जिसमे 41% आईटी सेक्टर, 16% बैंकिंग और विनिर्माण क्षेत्र, 10% को-वर्किंग स्पेस और 17% अन्य सेवाओं द्वारा किराए पर लिए गए है। 2020 में, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में ऑफिस स्पेस का 24% हिस्सा 5.7 मिलियन वर्ग फुट पर लीज पर दिया गया है। एसएमई और इलेक्ट्रॉनिक घटक निर्माताओं ने पुणे, चेन्नई और दिल्ली एनसीआर के बीच सबसे अधिक पट्टे पर दिया गया, चेन्नई, अहमदाबाद और पुणे में ऑटो क्षेत्र को पट्टे पर देने मैं प्रमुख भूमिका थी, लॉजिस्टिक्स, ई-कॉमर्स और रिटेल सेगमेंट में क्रमशः 34%, 26% और 9% ऑफिस स्पेस पट्टों पर लेने की विशिष्ट भूमिका है। अनुमानित रुझान वर्ष 2021 वितीय वर्ष की आखरी तिमाही में रियल एस्टेट में कुल PE निवेश, कार्यालय खंड ने 71% हिस्सेदारी को आकर्षित कर सकता है, इसके बाद खुदरा 15% और वेयरहाउसिंग में 4% प्रत्येक के साथ, 2022 वितीय वर्ष तक व्यवसायिक सम्पतियो की मांग बढ़ने का अनुमान है, जिसमे दिल्ली-एनसीआर इस मांग में सबसे अधिक देखा जा सकता है।

शिक्षक

अंकुर सिंह
जौनपुर, यूपी

प्रणाम उस मानुष तन को,
शिक्षा जिससे हमने पाया।
माता पिता के बाद हमपर,
उनकी है प्रेम मधुर छाया।।
नमन करता उन गुरुवर को,
शिक्षा दें मुझे सफल बनाए।।
अच्छे बुरें का फर्क बता,
उन्नति का सफल राह दिखाए।।
शिक्षक अध्यापक गुरु जैसें,
नाम अनेकों मानुष तन के,
कभी भय, कभी प्यार जता,
हमें जीवन की राह दिखाते।।
कभी भय, कभी फटकार कर,
कुम्हार भांति रोज़ पकाते।
लगन और अथक मेहनत से,
शिक्षक हमें सर्वश्रेष्ठ बनाते।
कहलाते है शिक्षक जग में,
ब्रह्म, विष्णु, महेश से महान।
मिली शिक्षक से शिक्षा हमें
जग में दिलाती खूब सम्मान।।
शिक्षा बिना तो मानव जीवन,
दुर्गम, पीड़ित और बेकार।
गुरुवर ने हमें शिक्षा देकर,
हमपर कर दी बहुत उपकार।।
अपने शिष्य को सफल देख,
प्रफुल्लित होता शिक्षक मन।
अपने गुणिजन गुरुवर को मैं,
अर्पित करता श्रद्धा सुमन।।

नेट-थियेट पर मंजरी किरण ने दिखाया कथक का लालित्य

गोपाल राधे श्याम, गोपाल हरी महारास पर कत्थक की शानदार प्रस्तुति

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। नेट-थियेट पर कथक गुरू मंजरी किरण ने जयपुर घराने की कथक परंपरा को साकार किया। जयपुर घराने के कथक का तात्पर्य राजस्थानी परंपरा से है। उन्होंने कथक के तोडों पर अपनी विभिन्न मुद्राओं से जयपुर कथक के लालित्य को दर्शाया। नेट-थियेट के श्री राजेंद्र शर्मा राजू ने बताया कि मंजरी किरण की शिष्याओं ने कठिन लयकारियों के साथ कथक के सात्विकभाव को प्रदर्शित कर जयपुर कथक घराने की परंपरा को जीवंत किया। कार्यक्रम की शुरूआत गणपती वंदना से हुई। उन्होंने कीतन धनी वृंदावन धाम है धनी वृंदावन नाम है जैसे चर्चित पदों पर कथक की प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में महारास प्रस्तुति गोपाल राधे श्याम, गोविंद हरि पर कथक की बारीकियां व तकनीक को उजागर किया। उनकी शिष्याओं अदिति शर्मा, दिशा भट, रिदम खण्डेलवाल, केतकी अग्रवाल एवं अंजना पिल्लई ने तीन ताल मे जयपुर कथक घराने का शुद्ध कथक जिसमें आमद, परम, तिहाई ,चक्करदार बंदिशों का प्रदर्शन किया। संगीत विष्णु कुमार जांगिड, प्रकाश अंकित जांगिड व दृश्य सज्जा मनोज स्वामी, अंकित शर्मा नोनू, अर्जुन देव, सौरभ कुमावत, अजय शर्मा, जीवितेष शर्मा,, जितेन्द्र शर्मा, तुषार का रहा।

'आखर पोथी' में साहित्यकार मानसिंह राठौड़ की पुस्तक 'टाबरिया म्हैं टाबरिया' का होगा विमोचन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रभा खेतान फाउंडेशन और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन की ओर से 22 सितंबर 2021, बुधवार को आखर पोथी का आयोजन किया जाएगा। श्री सीमेंट के सहयोग से होने वाले इस कार्यक्रम में राजस्थानी भाषा में बाल साहित्य पर विचार-विमर्श किया जाएगा। इसी के अंतर्गत मानसिंह राठौड़ 'मातासर' की पुस्तक 'टाबरिया म्हैं टाबरिया' पर साहित्यिक चर्चा होगी। इस पुस्तक में राजस्थानी भाषा में छोटे-छोटे बाल गीत है। इसकी प्रस्तावना वरिष्ठ साहित्यकार दीनदयाल शर्मा ने लिखी है।

साहित्यकार राठौड़ राजस्थानी और हिंदी के लेखक है। इनके अभी तक 7 साझा संकलन प्रकाशित हो चुके है। इनकी रचनाएं टाबर टोली, जागती जोत, माणक, रूड़ौ राजस्थान, राजस्थली, कथेसर, संघशक्ति, सारा, संगिनी, सहित अनेक राजस्थानी और हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। इन्हें साहित्य सृजन के लिए कई संस्थाओं की ओर से पुरस्कृत किया जा चुका है।

राजस्थानी साहित्य पर गंभीर चर्चा करने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। आखर पोथी में युवा लेखकों की पुस्तकों को शामिल किया जाता है। इसमे पूरे राजस्थान से साहित्यकार और पाठक शामिल होते है। इसके अंतर्गत अब तक राजस्थानी भाषा की 6 पुस्तकों पर साहित्यिक चर्चा हो चुकी है। इसमे साहित्यकार मोहन पुरी की पुस्तक अचपळी बातां, गजे सिंह राजपुरोहित की पुस्तक पळकती प्रीत, लेखिका संतोष चौधरी की पुस्तक काया री कळझळ, भोगीलाल पाटीदार की पुस्तक हिजरतु वन, शिवचरण सेन की पुस्तक इंतकाळ और डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा की पुस्तक अटकळ का लोकार्पण और साहित्यिक चर्चा की जा चुकी है।

घायलों को हॉस्पिटल पहुंचाने वाले को मिलेगा इनाम

राजस्थान सरकार पांच हजार रुपए और सर्टिफिकेट देगी, घायल का मुफ्त इलाज होगा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में आए दिन होती सड़क दुर्घटनाओं में कई लोग घायल होते हैं। घायलों की मदद के लिए आगे आने से लोग कतराते है। सभी पुलिस और सरकारी एम्बुलेंस का इंतजार करते रहते हैं। इस कारण घायलों को समय पर इलाज नहीं मिलने से जान भी चली जाती है। ऐसी स्थिति देखते हुए राजस्थान सरकार ने नई योजना शुरू की है। इस योजना में घायलों को जल्द से जल्द अपने संसाधन से हॉस्पिटल पहुंचाने वाले व्यक्तियों को सरकार 5 हजार रुपए और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करेगी।

सीएम अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री चिरंजीवी जीवन रक्षा योजना की शुरुआत की है। इस योजना के तहत घायल व्यक्ति की मदद करने वाले व्यक्ति से किसी तरह की कोई पूछताछ पुलिस नहीं कर सकेगी।

साथ ही मदद करने वाले व्यक्ति से हॉस्पिटल में घायल व्यक्ति के इलाज के लिए किसी तरह का कोई पैसा भी नहीं लिया जाएगा।

गंभीर स्थिति में लाने वाले व्यक्ति के लिए मिलेगी इनाम राशिः इस योजना के तहत इनाम की राशि उसी स्थिति में मिलेगी जब दुर्घटना में घायल व्यक्ति की स्थिति गंभीर हो। सामान्य घायल होने वाले व्यक्ति की मदद करने वाले को केवल प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। सरकारी एम्बुलेंस, निजी एम्बुलेंस के कर्मचारी, पीसीआर वैन और ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मचारियों और घायल व्यक्ति के सगे-संबंधियों को इस योजना के तहत इनाम राशि नहीं दी जाएगी।

CMO को देनी होगी जानकारीः घायल व्यक्ति की मदद करने वाले व्यक्ति अगर इस योजना के तहत इनाम राशि लेने का इच्छुक है तो उसे अपनी पूरी जानकारी हॉस्पिटल में तैनात कैजुअल्टी मेडिकल ऑफिसर (CMO) को देनी होगी। वहां उस व्यक्ति को अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर और बैंक खाता संख्या देना होगा। CMO की रिपोर्ट पर ही तय होगा कि व्यक्ति गंभीर रूप से घायल था या नहीं और उसे तुरंत इलाज की जरूरत थी या नहीं? CMO ही रिपोर्ट तैयार करके डायरेक्टर (पब्लिक हेल्थ) को भिजवाएगा, इसी आधार पर पुरस्कार मिलेगा।

विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस मनाया गया

जयपुर। ''विश्व ओज़ोन परत संरक्षण दिवस पर सवाईमाधोपुर के एक रिसोर्ट में आयोजित किया गया जिसमें प्रकृति की पुकार , शिक्षक की पाती एवम पाती मीत के नाम पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम में मौजूद ज्ञानवती सक्सेना जी ने बताया कि पाती मुहिम परिवार सम्मान का समारोह,नीलिमा तिग्गा जी एवं नीना छिब्बर जी विमला नगला जी आदि लेखकों की आठ पुस्तकों के लोकार्पण के अद्भुत एवम अविस्मरणीय अनुष्ठान का आयोजन सूरज सिंह नेगी जी एवं अत्यंत सौम्य मीना सरोला जी द्वारा किया गया। सभी अध्यक्ष महोदय एवं विशिष्ट अतिथियों के प्रेरणास्पद उद्बोधन से लाभान्वित हुए। विमला नागला जी का मंच संचालन अत्यंत सराहनीय एवं प्रभावी रहा।

समाज को संवेदनशील बनाने हेतु आपके द्वारा चलाया गया अभियान 'पाती की मुहिम' जो अत्यंत श्रम साध्य,समय साध्य,धन साध्य मुहीम है,जो बहुत ही क़ाबिले तारीफ़ है , उनके सहज सरल संवेदनशील,कर्मठ व्यक्तित्व और कृतित्व

को नमन। प्रशासनिक कार्यों की अत्यंत व्यस्तता के उपरांत भी साहित्य के प्रति उनका समर्पण, समाज के प्रति सजगता, साहित्य की सेवा, साहित्य साधकों के प्रति आदर सम्मान की भावना आपको विशिष्ट बनाती है। देव दत्त जी, नीलिमा तिग्गा जी,नीना छिब्बर जी ,डॉ लता अग्रवाल जी , राजेश श्रीवास्तव जी सभी साहित्यकारों ने संक्षिप्त परिचय दिया जो कि श्रोताओं के मन पर अंकित हो गया। आयोजन अत्यंत भव्य, गरिमामय एवम् यादगार रहा।

समाज के अंतिम छोर तक पहुंचे योजनाओं का लाभः मुख्य सचिव

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने गुरुवार को बीकानेर जाते समय जिले के रतनगढ़ एवं राजलदेसर में विभिन्न स्थानों पर लोगों के अभाव अभियोग सुने और राजलदेसर पुलिस थाना का निरीक्षण किया। इस दौरान जिला कलक्टर साँवर मल वर्मा भी उनके साथ रहे।

मुख्य सचिव ने राजलदेसर पुलिस थाना एवं स्वागत कक्ष का निरीक्षण करते हुए यहां की व्यवस्थाओं की सराहना की। उन्होंने निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक नारायण टोगस, एसएचओ डॉ. महेंद्र कुमार एवं महिला डेस्क प्रभारी से विभिन्न व्यवस्थाओं के बारे फीडबैक लिया। मुख्य सचिव ने थाने में महिला डेस्क, क्राइम रजिस्टर, स्टॉक रजिस्टर, माल खाना, हवालात, रसोई और बैरकों का निरीक्षण कर जानकारी ली।

इससे पूर्व उन्होंने रतनगढ़ एवं राजलदेसर क्षेत्र में विभिन्न जगहों पर रुक कर लोगों के अभाव अभियोग सुने और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। विधायक अभिनेश महर्षि, पूर्व प्रधान पूसाराम गोदारा, पूर्व प्रधान संतोष तालणिया, कल्याण सिंह आदि ने इस दौरान मुख्य सचिव से मिलकर बरसाती पानी की निकासी सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया।

बढ़ती मांसाहार की प्रवृति भूकम्प और बाढ़ के लिए जिम्मेदारः ठाकुर राजा रईस

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की कार्यशाला में विभिन्न वक्ताओं ने शाकाहार पर दिया बल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की जयपुर इकाई की ओर से रविवार को यहां चैम्बर ऑफ कॉमर्स के भैंरो सिंह शेखावत सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें मंच के राष्ट्रीय संयोजक एवं मुख्य वक्ता ठाकुर राजा रईस ने कहा कि हमारा किसी से कोई द्विवेष या विरोध नहीं है, किन्तु मूक पशु, पक्षी की देखभाल एवं सार-संभाल हम सबकी जिम्मेदारी है। प्रकृति ने जितने भी जीव इस धरती पर भेजे है, उनका संरक्षण भी होना चाहिए। इस बात की षिक्षा हजरत मुहम्मद साहब ने भी दी है। अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि कहीं-कहीं तुम्हारी हुकूमत नहीं होगी, लेकिन हाकिमों का हूकुम मानना होगा। राजा रईस ने कहा कि जब हम एक हरा पेड़ नहीं काट सकते तो पशु वध कैसे कर सकते है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं पर हुई नई खोजों के नतीजे माने तो इन दिनों बढ़ती मांसाहार की प्रवृति भूकम्प और बाढ़ के लिए जिम्मेदार है। उन्होंने मांसाहार के खिलाफ कई वैज्ञानिकों के उदाहरण देते हुए शाकाहार पर बल दिया। उन्होंने बूचड़खानों में हो रही पशु क्रूरता के प्रति चिंता जताई।

राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व चेएरमैन सरदार जसबीर सिंह ने कहा कि संताने माता-पिता के कर्ज के बोझ के नीचे सदैव रहेगी। संतानों को चाहिए कि वे अज्ञाकारी बन कर रहे। उन्होंने आपसी भाईचारे की प्रगाढ़ता पर बल दिया।

दो दिवसीय जयपुर हार्ट रिदम समिट का समापन

क्रायो एब्लेशन से संभव अनियंत्रित धड़कन का सटीक इलाज

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। हृदय में 300 धड़कन प्रतिमिनट तक ले जाने वाली खतरनाक बीमारी एट्रियल फिब्रिलेशन के इलाज के लिए अब नई तकनीक क्रायो एब्लेशन आ गई है जिसमें बहुत कम तापमान वाले बैलून की मदद से एट्रियल फिब्रिलेशन का कारण बने हिस्से को ब्लॉक कर धड़कन को नियंत्रित कर लिया जाता है। शहर में चल रही दो दो दिवसीय जयपुर हार्ट रिदम समिट का रविवार को समापन हुआ। कॉन्फ्रेंस में आए नामी डॉक्टर्स ने इलेक्ट्रोफीजियोलॉजी में आईं नवीनतम तकनीकों के बारे में जानकारियां दीं।

कॉन्फ्रेंस के ऑर्गनाइजिंग चेयरमैन डॉ. जितेंद्र सिंह मक्कड़ ने बताया कि दो दिनों में देशभर से 100 से अधिक एक्सपर्ट्स ने इस कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। साथ ही दूसरे देशों के एक्सपर्ट्स भी इस

कॉन्फ्रेंस से ऑनलाइन जुड़े। कॉन्फ्रेंस के आखिरी दिन फिजियोलॉजिकल पेसिंग, लीड लेस पेसमेकर, रेडियोफिक्वेंसी एब्लेशन, 3डी मैपिंग जैसी तकनीकों पर चर्चा की गई और जटिल केसों के इलाज की भी जानकारी दी गई। कॉन्फ्रेंस में गेस्ट फैकल्टी के रूप में शामिल हुए पद्मभूषण कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. टी.एस. क्लेर, डॉ. अपर्णा जयसवाल, डॉ. अनूप गुप्ता और डॉ. वनिता अरोड़ा ने हार्ट पेशेंट्स में सडन कार्डियक अरेस्ट के कारणों की पहले ही पहचान कर उनके इलाज के बारे में लेक्चर दिया। ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. कुश कुमार भगत ने बताया कि इस दौरान मेडिकल स्टूडेंट्स के लिए सिम्यूलेटर पर केस हैंडल करने का एक सेशन भी किया गया जिसमें पेशेंट में डिवाइस इंप्लांट करने की बारीकी के बारे में जानकारी दी गई।

आईसीयू में भर्ती 15 से 20 प्रतिशत मरीजों को अनियंत्रित धड़कन की समस्या : अहमदाबाद के डॉ. अनूप गुप्ता ने बताया कि आइसीयू में भर्ती होने वाले 15 से 20 प्रतिशत मरीजों को अनियंत्रित धड़कन की बीमारी अरिद्मिया होती है और अधिकांश मरीज एट्रियल फिब्रिलेशन या वेंट्रीकुलर टेकीकार्डिया से पीड़ित होते हैं। इन मरीजों की मृत्यु दर भी काफी अधिक है। ऐसे में अब तक एट्रियल फिब्रिलेशन के इलाज में रेडियोफ्रिक्वेंसी एब्लेशन द्वारा ब्लॉक कर धड़कन को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता था। इसमें अब क्रायो एब्लेशन तकनीक से कैथेटर के जरिए मरीज के फेफड़ों तक पहुंचकर नसों के बीच जमाव बिंदु के तापमान वाला बैलून फुलाया जाता है जिससे प्रभावित हिस्से में एक प्रकार का ब्लॉक बन जाता है और मरीज का एएफ नियंत्रित हो जाता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**